CC-14- Revolution and Revolutionary thoughts

Unit-V (Gandhian Ideology) Part-4

For P.G.Sem-3

गांधी जी के अनुसार सत्याग्रह

- गांधीवादी विचारधारा का मूल तत्व सत्याग्रह-सत्य+आग्रह है जिसका तात्पर्य है सत्य पर अड़े रहना अथवा सत्य के मार्ग से कभी नहीं हटना चाहे जितनी भी बाधाएं एवं यातनाएं क्यों न सहनी पड़े।
- अहिंसा के माध्यम से असत्य पर आधारित बुराई का विरोध करना ही सत्याग्रह है। सत्याग्रह स्वयं दृढ़ होकर अपने विरोधी को यह महसूस करवाता है कि उसका मार्ग असत्य एवं बुराई का मार्ग है। ज्यों-ज्यों उसे यह पता चलेगा वह स्वतंत्र बुराई छोड़कर भलाई की ओर अग्रसर होता जाएगा। यही हृदय परिवर्तन कहलाता है।

- **सत्याग्रही द्वारा प्रयुक्त साधन-** सत्याग्रह ही को कतिपय साधनों का प्रयोग करना पड़ता है जैसे हड़ताल, असहयोग, सविनय अवज्ञा, धरना, बहिष्कार आदि।
- गांधी जी ने निष्क्रिय प्रतिरोध अर्थात विरोधी को हराने का प्रयत्न से ज्यादा सत्याग्रह को महत्व दिया है। निष्क्रिय प्रतिरोध में आत्मिक शक्ति नहीं होता है। यह कमजोरी का प्रतिफल है जबकि सत्याग्रह निर्भीकता का ।

- **सत्याग्रह का प्रथम प्रयोग -**गांधी जी दक्षिण अफ्रीका में श्वेतों एवं अश्वेतों के बीच भेदभाव से दुखी थे। उन्होंने 1906 ईस्वी में 'एशियाई पंजीकरण अधिनियम'(Asiatic Registration Act) के विरोध के लिए सत्याग्रह किया।

इस एक्ट में दर्ज नहीं होने पर भारतीय लोगों पर 100 पाउंड का जुर्माना लगाया जाता साथ ही उन्हें वहां से निकाल दिया जाता था। गांधी जी ने 11 सितंबर 1906 को जोहान्सबर्ग में करीब 3000 भारतीयों के जनसमूह को संबोधित किया एवं अहिंसक प्रतिरोध की रणनीति पेश की। उनका यह प्रयोग सफल रहा। गोरी सरकार ने भारतीयों पर से कुछ प्रतिबंध हटा दी।

- गांधी जी के सहयोगी 'मगनलाल' ने रंगभेद की नीति के विरोध चलने वाले आंदोलन का नाम **सदाग्रह** रखने का सुझाव दिया जिसका उद्देश्य था अच्छे उद्देश्य के प्रति दृढ़ता। गांधी जी ने इसका नाम बदलकर 'सत्याग्रह' रखा। सत् शब्द मुक्तविचार, ईमानदारी, दृढ़ता एवं सत्य को परिलक्षित करता है। सत्य शब्द सत्य से लिया गया है जिसका अर्थ है वास्तव में दुनिया में सत्य के अलावा किसी का भी अस्तित्व नहीं है।
- सत्याग्रह सत्य एवं अहिंसा के दो सिद्धांतों पर आधारित है जिसे गांधी जी ने राजनीतिक विचारधारा का मूल सिद्धांत बनाया। जैन, बौद्ध उपनिषद भागवत गीता से यह प्रभावित रहा है साथ ही उपनिषद एवं ईसाई धर्म जिसमें किसी बुराई का प्रतिरोध नहीं करने संबंधी विचार मिलते हैं से भी यह जुड़ा है।
- भारत में उन्होंने चंपारण, खेड़ा, अहमदाबाद में इसका परीक्षण किया। चंपारण एवं अहमदाबाद के सत्याग्रह ने उनमें विश्वास भर दिया कि सत्याग्रह का रास्ता किसी भी समाधान के लिए उत्तम है।

- **<u>सत्याग्रह की आवश्यकता</u>**- गांधी जी का मान्यता थी कि राजनीति एवं समाज में हिंसक क्रांति से बदलाव नहीं लाया जा सकता बल्कि हृदय एवं मस्तिष्क परिवर्तित करके बदलाव लाया जा सकता है। हर व्यक्ति में विवेक होता है जिसे हिंसात्मक उपाय के बजाय 'आत्मशुद्धि' एवं 'नैतिक प्रभाव' के जरिए

जागृत किया जा सकता है। गांधी जी के दर्शन का मूल आधार 'धर्म' है। यह धर्म 'सत्य' एवं 'अहिंसा' से जुड़ा है। इसे ही 'राजनीति का आध्यात्मिककरण'(Spiritualisation of politics)कहा गया है मैकियावेली एवं हाब्स की तरह वे राजनीति एवं धर्म को अलग नहीं मानते थे।

- गांधी जी का सत्य, अहिंसा ने 'सत्याग्रह' का रूप ले लिया। यह उनके राजनीतिक जीवन का मूल मंत्र बन गया। उनका मानना था कि सत्य-अहिंसा या सत्याग्रह के आधार पर किसी भी निर्दयी सरकार को प्रभावित किया जा सकता है, उसे समर्पण के लिए कहा जा सकता है।
- **<u>सत्याग्रह दर्शन</u>** -गांधी जी के अनुसार अपने विरोधियों को दुखी बनाने की अपेक्षा स्वयं दुःख सहकर सत्य की विजय प्राप्त करना ही सत्याग्रह है। यह वीर एवं शक्तिशाली मनुष्य का शस्त्र है एवं सत्याग्रह अपने प्रतिद्वंद्वी से आध्यात्मिक संबंध कायम कर लेता है।
- प्रत्येक व्यक्ति सत्याग्रही नहीं हो सकता है। सत्याग्रह में विश्वास करने वाला व्यक्ति सत्य पर चलने वाला हो, अनुशासन प्रिय हो, मन- वचन- कर्म से अहिंसा विश्वास करने वाला हो। सत्याग्रही कभी अपने उद्देश्य की प्राप्ति के लिए छल, कपट, झूठ, हिंसा इत्यादि का सहारा नहीं लेता है।
- हिंद स्वराज (1909) में गांधी जी ने सत्याग्रह के लिए कई व्रतों का पालन अनिवार्य बताया है-अहिंसा, सत्य, अस्तेय ,अपरिग्रह, ब्रह्मचर्य, शारीरिक श्रम, आस्वाद, निर्भीकता, सभी धर्म के प्रति समभाव, स्वदेशी तथा अस्पृश्यता निवारण।

To be continued...